International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 7 Issue 1, January 2017,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दिल्ली सल्तनत की राजनीतिक पृष्ठभूमिः एक अवलोकन

डॉ. प्रतिभा सिंह*

दिल्ली सल्तनत की स्थापना 1206 ई. में की गई। इस्लाम की स्थापना के परिणामस्वरूप अरब और मध्य एशिया में हुए धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तनों ने जिस प्रसारवादी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया, दिल्ली सल्तनत की स्थापना उसी का परिणाम थी। बाद के काल में मंगोलों के आक्रमण से इस्लामी जगत् भयभीत था। उसके आतंक के कारण इस्लाम के जन्म स्थान से इस्लामी राजसत्ता के पाँव उखड़ गये थे। इस स्थिति में दिल्ली सल्तनत इस्लाम को मानने वाले संतों, विद्वानों, साहित्यकारों और शासकों की शरणस्थली बन गयी थी। मुस्लिम राज्य सैद्धांतिक रूप से धर्मावलंबी या धर्म प्रधान राज्य था। खलीफा पूरे मुस्लिम जगत का सर्वोच्च प्रधान होता था। सुल्तान की उपाधि तुर्की शासकों द्वारा प्रारंभ की गई। महमूद गजनवी पहला शासक था जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की। उसे यह उपाधि बगदाद के खलीफा से प्राप्त हुई थी। खिज्र खाँ को छोङकर दिल्ली सल्तनत के सभी तुर्की शासकों ने सुल्तान की उपाधि धारण की। खिज्र खाँ ने यह उपाधि महमूद गजनवी से प्राप्त की थी। दिल्ली सुल्तानों में अधिकांश ने अपने को खलीफा का नायब पुकारा परन्तु कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने स्वयं को खलीफा घोषित किया। खिज्र खाँ ने तैमूर के पुत्र शाहरुख का प्रभुत्व स्वीकार किया और रैयत –ए –आला की उपाधि धारण की। उसके पुत्र और उत्तराधिकारी मुबारकशाह ने इस प्रथा को समाप्त किया और शाह ने सुल्तान की उपाधि ग्रहण की।

दिल्ली सल्तनत या सल्तनत–ए–हिन्द सल्तनत–ए–दिल्ली 1210 से 1526 तक भारत पर शासन करने वाले पाँच वंश के सुल्तानों के शासनकाल को कहा जाता है। दिल्ली सल्तनत पर राज पाँच वंशों में चार वंश मूल रूप तुर्क थे जबकि अंतिम वंश अफगान था। ये पाँच वंश गुलाम वंश (1206–1290), खलिजी वंश (1290–1320), तुगलक वंश (1320–1423), सैयद वंश (1424–1452), तथा लोदी वंश (1452–1526) हैं।

इस सल्तनत ने न केवल बहुत से दक्षिण एशिया के मंदिरों का विनाश किया साथ ही अपवित्र भी किया, पर इसने भारतीय–इस्लामिक वास्तुकला के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दिल्ली सल्तनत मुस्लिम इतिहास के कुछ कालखंडों में है जहां किसी महिला ने सत्ता संभाली। १५२६ में मुगल सल्तनत द्वारा इस साम्राज्य का अंत हुआ।

962 ईस्वी में दक्षिण एशिया के हिन्दू और बौद्ध साम्राज्यों के उपर मुस्लिम सेना द्वारा, जो कि फारस और मध्य एशिया से आए थे, व्यापक स्तर पर हमलें होने लगे। इनमें से महमूद गजनवी ने सिंधु नदी के पूर्व में तथा यमुना नदी के पश्चिम में बसे साम्राज्यों को 997 इस्वी से 1030 इस्वी तक १७ बार लूटा। महमूद गजनवी ने लूट तो बहुत की मगर वह अपने साम्राज्य को पश्चिम पंजाब तक ही बढ़ा सका।

महमूद गजनवी के बाद भी मुस्लिम सरदारों ने पश्चिम और उत्तर भारत को लूटना जारी रखा। परंतु वो भारत में स्थायी इस्लामिक शासन स्थापित न कर सके। इसके बाद गोर वंश के सुल्तान मोहम्मद गौरी ने उत्तर भारत पर योजनाबद्ध तरीके से हमले करना आरम्भ किया। उसने अपने उद्देश्य के तहत इस्लामिक शासन को बढ़ाना शुरू किया। गोरी एक

* डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

सुन्नी मुसलमान था, जिसने अपने साम्राज्य को पूर्वी सिंधु नदी तक बढ़ाया और सल्तनत काल की नीव डाली। कुछ ऐतेहासिक ग्रंथों में सल्तनत काल को 1192–1526 (३३४ वर्ष) तक बताया गया है।

गुलाम वंश के दौरान, कुतुब–उद–दीन ऐबक ने कुतुब मीनार और कुवत्त–ए–इस्लाम (जिसका अर्थ है इस्लाम की शक्ति) मस्जिद का निर्माण शुरू कराया, जो कि आज यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व विरासत स्थल है। इसको २० हिन्दू मंदिरों को तोड़कर बनाया गया है। कुतुब मीनार का निर्माण कार्य इल्तुतमिश द्वारा आगे बढ़ाया गया और अलाउद्दीन खिलजी द्वारा पूर्ण कराया गया। गुलाम वंश के शासन के दौरान बहुत से अफगान और फारस के अमीरों ने भारत में शरण ली और बस गए।

खिलजी (1290–1320)

इस वंश का पहला शासक जलालुद्दीन खिलजी था। उसने १२९० इस्वी में गुलाम वंश के अंतिम शासक कैकुबाद की हत्या कर सत्ता प्राप्त की। उसने कैकुबाद को तुर्क, अफगान और फारस के अमीरों के इशारे पर हत्या की। जलालुद्दीन खिलजी मूल रूप से अफगान–तुर्क मूल का था। उसने ६ वर्ष तक शासन किया। उसकी हत्या उसके भतीजे और दामाद जूना खान ने कर दी। जूना खान ही बाद में अलाउद्दीन खिलजी नाम से जाना गया। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सैन्य अभियान का आरम्भ कारा/ कड़ा जागीर के सूबेदार के रूप में की, जहां से उसने मालवा (१२९२) और देवगिरी (१२९४) पर छापा मारा और भारी लूटपाट की। अपनी सत्ता पाने के बाद उसने अपने सैन्य अभियान दक्षिण भारत में भी चलाए। उसने गुजरात, मालवा, रणथम्बौर और चित्तौड़ को अपने राज्य में शामिल कर लिया। उसके इस जीत का जश्न थोड़े समय तक रहा क्योंकि मंगोलों ने उत्तर–पश्चिमी सीमा से लूटमार का सिलसिला शुरू कर दिया। मंगोलों लूटमार के पश्चात वापस लौट गए और छापे मारने भी बंद कर दिए।

तुगलक (१३२०–१४१३)

तुगलक वंश ने दिल्ली पर १३२० से १४१३ तक राज किया। तुगलक वंश का पहला शासक गाजी मलिक जिसने अपने को गयासुद्दीन तुगलक के रूप में पेश किया। वह मूल रूप तुर्क–भारतीय था, जिसके पिता तुर्क और मां हिन्दू थी। गयासुद्दीन तुगलक ने पाँच वर्षों तक शासन किया और दिल्ली के समीप एक नया नगर तुगलकाबाद बसाया। कुछ इतिहासकारों जैसे विन्सेंट स्मिथ के अनुसार, वह अपने पुत्र जूना खान द्वारा मारा गया, जिसने १३२५ इस्वी में दिल्ली की गद्दी प्राप्त की। जूना खान ने स्वयं को मुहम्मद बिन तुगलक के पेश किया और २६ वर्षों तक दिल्ली पर शासन किया। उसके शासन के दौरान दिल्ली सल्तनत का सबसे अधिक भौगोलिक क्षेत्रफल रहा, जिसमे लगभग पूरा भारतीय उपमहाद्वीप शामिल था।

मुहम्मद बिन तुगलक के खिलाफ १३२७ इस्वी से विद्रोह प्रारंभ हो गए। यह लगातार जारी रहे, जिसके कारण उसके सल्तनत का भौगोलिक क्षेत्रफल सिकुड़ता गया। दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य का उदय हुआ जो कि दिल्ली सल्तनत द्वारा होने वाले आक्रमणों का मजबूती से प्रतिकार करने लगा। १३३७ में, मुहम्मद बिन तुगलक ने चीन पर आक्रमण करने का आदेश दिया और अपनी सेनाओं को हिमालय पर्वत से गुजरने का आदेश दिया। इस यात्रा में कुछ ही सैनिक जीवित बच पाए। जीवित बच कर लौटने वाले असफल होकर लौटे।

तुगलक वंश को वास्तुकला संरक्षण के लिए याद किया जाता है, जैसे पुरानी लाटें जो कि हिन्दू, बौद्ध जनित तीसरी शताब्दी से थी, सल्तनत ने इसका उपयोग मस्जिद की मीनारों के लिए किया। फिरोज शाह ने इन मीनारों को मस्जिदों के पास स्थापित कराया। इस खम्भे (दायाँ) में ब्रम्ही लिपि में अंकित अक्षरों का अर्थ फिरोज शाह के समय किसी को नहीं पता था। १८३७ मेंय अंकित अक्षरों का अर्थ जेम्स प्रिंसेप ने ४८० साल बाद पता लगया, इस खम्भे पर सम्राट अशोक द्वारा लिखा गया है।

अलाउद्दीन की तरह मुहम्मद बिन तुगलक भी विश्व–विजय के अपूर्व स्वप्न देखा करता था। कुछ खुरासानी सरदारों से, जो सुल्तान की अत्याधिक उदारता से प्रलोभित होकर उसके दरबार में आये थे तथा अपना उल्लू सीधा करना चाहते

थे, प्रोत्साहन पाकर सुल्तान ने, अपने शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में, खुरासान एवं ईराक जीतने की महत्त्वाकांक्षी योजना बनायी तथा इस उद्देश्य से एक विशाल सेना इकट्ठी की। बरनी लिखता है कि दीवाने अर्ज के दफ्तर में तीन लाख सत्तर हजार व्यक्ति भरती किये गये तथा उन्हें पूरे एक वर्ष तक राज्य की ओर से वेतन दिया गया।

दिल्ली सल्तनत के दौरान कला

1258 ईस्वी में दिल्ली सल्तनत अत्यंत महत्वपूर्ण कला और संस्कृति का केंद्र हो चुका था। चूँकि मंगोलों ने मध्य और पश्चिमी एशिया के सांस्कृतिक केंद्रों को नष्ट कर दिया और उस इलाके के कलाकारों के लिए भारत के महत्वपूर्ण केंद्र साबित हुआ था। 1296–1316 ईस्वी के दौरान, खुसरो की कविता, बरनी का ऐतिहासिक कार्यशैली और हजरत निजाम–उद–दीन औलिया की तालिका में इस सांस्कृतिक जीवन शक्ति के सभी तत्व मौजूद रहे थे। इस अवधि में बगदाद और कॉर्डोबा में किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक खोजों या इससे सम्बंधित तथ्यों के ऊपर खोजबीन के कार्यो के बारे में पता नहीं चलता है। और शायद यही कारण था की मध्य एवं पश्चिमी एशिया के के कलाकारों और विद्वान समुदायों नें भारत की तरफ आने का निर्णय किया और भारत का रुख किया। उल्लेखनीय है की इस क्षेत्र से आने वाले सभी कलाकारों ने किसी भी प्रकार के कोई पुस्तकालयों को नहीं लाया था। नतीजतन, जो भी कविता, संगीत और लेखन के सन्दर्भ में कार्य किया गया वे सभी किसी अन्य ज्ञान के संग्रह पर निर्भर नहीं थे। यही कारण था की पुस्तकालयों की कमी के कारण, भारत में बड़े शिक्षण संस्थानों को विकसित नहीं किया गया.

तुर्की शासक

तुर्कों के आक्रमण के पूर्व अरबों ने भारत पर आक्रमण किए किंतु भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना का श्रेय तुर्कों को जाता है। मुस्लिम आक्रमण के समय भारत में एक बार पुनः विकेन्द्रीकरण तथा विभाजन की परिस्थितियाँ सक्रिय हो उठीं। तुर्की आक्रमण भारत में कई चरणों में हुआ। प्रथम चरण का आक्रमण 1000 से 1027 ई0 के बीच गजनी के शासक महमूद द्वारा किया गया। इसके पूर्व सुंबुक्तगीन (महमूद के पिता) की लड़ाई हिन्दूशाही शासकों के साथ हुई थी, किन्तु उसका क्षेत्र सीमित था भारत के गुजरात क्षेत्र तक महमूद ने अपना शासन स्थापित किया लेकिन उत्तरी भारत के शेष क्षेत्र अभी तुर्क प्रभाव से बाहर थे। कालांतर में गौर के शासक शिहाबुद्दीन मोहम्मद ने पुनः भारत में सैनिक अभियान किए। 1175 से 1206 ई0 के बीच उसने और उसके दो प्रमुख सेनापतियों (ऐबक और बख्तियार खिलजी) ने गुजरात, पंजाब से लेकर बंगाल तक के क्षेत्र को जीतकर सत्ता स्थापित की। किंतु 1206 ई0 में गोरी की मुत्यु के पश्चात् तुर्क साम्राज्य कई हिस्सों में बंट गया और आगे चलकर भारत में दिल्ली सल्तनत नाम से तुर्क साम्राज्य स्थापित हुआ।

दिल्ली सल्तनत का पतन

इस्लाम में, एक राज्य इस्लामी राज्य, एक ग्रंथ कुरान, एक धर्म इस्लाम और एक जाति मुसलमान की अवधारणा है। मुहम्मद पैगम्बर के बाद प्रारंभ में चार खलीफा हुये–हजरत अबूवक्र, हजरत उमर, हजरत उस्मान ओर हजरत अली। प्रारंभ में खलीफा का चुनाव होता था किन्तु आगे चलकर खलीफा का पद वंशानुगत हो गया। 661 ई. में उम्मैया वंश खलीफा के पद पर प्रतिष्ठित हुआ और उसका केन्द्र दमिश्क (सीरिया) था। 750 ईमें अब्बासी खलीफा स्थापित हुए और उनका केन्द्र बगदाद था।। 1253 ई. में चंगेज खाँ के पोते हलाकू खाँ ने बगदाद के खलीफा की हत्या कर दी। फिर खलीफा की सत्ता का केन्द्र मिस्र हो गया। अब खलीफा के पद के कई दावेदार हो गये थे, यथा स्पेन का उम्मैया वंश, मिश्र का फातिमी वंश और बगदाद के अब्बासी वंश। प्रारंभ में एक ही इस्लाम राज्य था। किन्तु आगे चलकर विभिन्न क्षेत्रों के गवर्नर व्यवहारिक बातों में स्वतंत्र होने लगे। अतः इस्लाम की एकता को बनाये रखने के लिये खलीफा ने उन गवर्नरो को शासन करने का सनद देना शुरू किया। सनद प्राप्त करने वाले गवर्नर सुल्तान कहे जाने लगे। सैद्धान्तिक रूप से खलीफा ही भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रधान होता था और सुल्तान उसका नायब होता था किन्तु व्यवहारिक बातों में सुल्तान स्वतंत्र होता था।

निष्कर्ष

भारत की राजधानी, दिल्ली की सशक्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही है। यहां भारतीय इतिहास के कुछ सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राटों ने शासन किया था। शहर का इतिहास महाभारत के जितना ही पुराना है। इस शहर को इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था, जहां कभी पांडव रहे थे। समय के साथ–साथ इंद्रप्रस्थ के आसपास आठ शहरः लाल कोट, दीनपनाह, किला राय पिथौरा, फिरोज़ाबाद, जहांपनाह, तुगलकाबाद और शाहजहानाबाद बसते रहे। पांच शताब्दियों से भी अधिक समय से दिल्ली राजनीतिक उथल–पुथल की गवाह रही है। यहां खिलजी और तुगलक वंशों के बाद मुग़लों ने शान किया। हन्दू राजाओं से लेकर मुस्लिम सुल्तानों तक, दिल्ली का शासन एक शासक से दूसरे शासक के हाथों जाता रहा। शहर की मिट्टी खून, कुर्बानी और देश–प्रेम से सींची हुई है। प्राचीन काल से ही पुरानी 'हवेलियां' और इमारतें खामोश खड़ी हैं किन्तु उनका खामोशियां अपने मालिकों और उन लोगों को सदाएं देती हैं जो सैंकड़ों वर्षों पहले उनमें रहे थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शिव कुमार गुप्त, मध्यकालीन भारत का इतिहास (1000–1526), पृ. 274–75
- जवामिउल हिकायत, नुरुद्दीन मुहम्मद औफी, हस्तलिपि, ओरिएण्टल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना।
- किताबुल हिन्द, अबू रेहान अलबरुनी, अंग्रेजी अनुवाद, सचाऊ दो जिल्दों में, लन्दन।
- खुलासत–उत–तवारीख, सुजान राय भण्डारी : सम्पादन जफर हुसैन, देहली, 1918।
- लताएफे कद्दुसी, संकलन, शेख रुकनुद्दीन देहली, 1311 हिजरी।
- मासिरे रहीमी, अब्दुलबाकी निहाबन्दी, एशियाटिक सोसाइटी, 1910–31।
- मुंशात माहरु, आइनुद्दीन अब्दुल्ला माहरु, सम्पादन, एस0ए0 रसीद, अलीगढ़।
- डॉ. आर. के. सक्सैना, दिल्ली सल्तनत (1200–1586), पृ. 31
- बी.एल. गुप्ता, पेमाराम, मध्यकालीन भारत (1000–1761), 1992, पृ. 77
- हबीबुल्ला, भारत के मुस्लिम राजा की बुनियाद, 1979, पृ. 163
- आर. के. सक्सेना, दिल्ली सल्तनत, पृ. 47–48